International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
www.hindijournal.com
Volume 1; Issue 1; November 2015; Page No. 25-27

मीडिया और वेब पर हिन्दी

डॉ. माधवी शर्मा

(प्राचार्य), डी. बी. (पी. जी.) महाविद्यालय, खेरली (अलवर)

मीडिया का अर्थ है दो बिन्दुओं को जोड़ने वाला। मीडिया संप्रेषक और श्रोता को परस्पर जोड़ते हैं। किसी भाव, विचार या जानकारी को जन–जन तक पहुंचाने की प्रक्रिया जनसंचार है। जनसंचार का उद्देष्य जानकारी या विचारों को समाज के जन समुदाय तक पहुंचाना है, उससे साझा करना है। जिससे कि सभी इससे अवगत हो सके तथा लाभान्वित हो सके।

संचार को परिभाषित करते हुए प्रसिद्ध संचारवेत्ता डेनिस मैक्वेल ने लिखा है ''एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक अर्थपूर्ण संदेषों का आदान–प्रदान ही संचार है।'' संचार माध्यम का मुख्य केन्द्र समाज है, जहाँ संचार की प्रक्रिया घटित होती है। संचार का लक्ष्य है–सूचनात्मक, प्रेरणात्मक, षिक्षात्मक व मनोरंजनात्मक।

सूचना संचार प्रणाली किसी भी व्यवस्था के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। अंग्रेज रहे हों या हिटलर जैसे तानाषाह, सब यह जानते थे कि सैन्य शक्ति के अलावा असली सत्ता जनसंचार में निहित होती है। आज भी यह शक्ति भूमण्डलीकरण की जान है। साहित्य भी संचार माध्यम का एक प्रकार ही है जो कि सूचनाओं का संप्रेषण करता है लेकिन संचार माध्यम की प्रभावोत्पादक गति अधिक तीव्र होती है क्योंकि वे तुरन्त और दूरगामी असर करतें हैं।

''इक्कीसवीं सदी का जन संचार हमारे जीवन तथा राष्ट्रीय विकास और उसकी दिषा निर्धारण का एक अभिन्न अंग बन चुका है। प्रातः होते ही अधिकतर लोग समाचार पत्र पढने में व्यस्त हो जाते हैं तो सुदूर गांवो के कुछ लोग रेडियो खोल लेते हैं, कुछ अन्य लोग दूरदर्षन पर आँख कान लगाए बैठ जाते हैं। इन विभिन्न माध्यमों से हम राजनैतिक आर्थिक सामाजिक खेलकूद आदि से सम्बन्धित गतिविधियों के समाचारों के अतिरिक्त विविध प्रकार के मनोरंजन का लाभ उठाते हैं। इन माध्यमों से प्रसारित विभिन्न विज्ञापन हमें उपभोक्ता संस्कृति से अनायास ही जोड़े रखते है। सच तो यह है कि जन संचार के इन विभिन्न माध्यमों ने व्यक्ति से लेकर जन समूह तक तथा एक देष से लेकर विष्व के विभिन्न देषो को एक सूत्र में बांध दिया है। इस बंधन के परिणामस्वरूप जनसंचार माध्यम राष्ट्रीय तथा वैष्विक स्तर पर चिन्तन विचार राजनीति अर्थ संस्कृति आदि के क्षेत्र में सम्मिलित प्रभाव डालने लगे हैं। और उनमें विष्व का मानचित्र बदलने की क्षमता विकसित हो चुकी है। जनसंचार का उद्देष्य है विविध प्रकार के भावों विचारों तथा जानकारियों को अधिकाधिक लोगों तक पहुंचाना ।[1] जन संचार के माध्यम से भावों, विचारों और जानकारियों का आदान–प्रदान होता है।

दृष्य– श्रव्य माध्यमों के अन्तर्गत नए जनसंचार माध्यमों का विकास हो रहा है। दृष्य या लिखित जनसंचार माध्यम जिसमे संचार पत्र–पत्रिकाऐं पोस्टर, पम्पलैट होर्डिग आदि की गणना की जाती है श्रव्यंजनसंचार माध्यम जिसमें रेडियो, ट्रांजिस्टर, ओडियो,कैसेट टेलिफोन,मोबाइल फोन आदि दृष्य–श्रव्य जनसंचार माध्यम जिसमें सिनेमा, टेलिविजन, वीडिओ कैसेट आदि ।[2]

1. प्रयोजन मूलक हिन्दी के विविध आयास – डा. महेन्द्र सिंह राणा पृष्ट 235– 236।
2. प्रयोजन मूलक हिन्दी के विविध आयास – डा. महेन्द्र सिंह राणा पृष्ट 237

संचार के माध्यम यदि आज के आम आदमी को पूरी दुनिया से जोड़ते हैं तो वे ऐसा भाषा के द्वारा ही करते हैं। संचार माध्यम की भाषा के रूप में प्रयुक्त होने पर हिन्दी समस्त ज्ञान–विज्ञान और आधुनिक विषयों से सहज ही जुड़ गई है। संचार में तीन तत्व हैं – भेजने वाला, संचार का माध्यम, उसे प्राप्त करने वाला। संचार साधन की सफलता प्रेषक के सक्षम होने अथवा संदेष के अस्पष्ट होने अथवा संदेष के अस्पष्ट होने अथवा संदेष प्राप्त करने वाले के उस संदेष के समझने पर निर्भर है। संचार माध्यम के अनेक रूप हैं जिनमें प्रमुख हैं :–

1. विज्ञापन
2. पत्र–पत्रिकाऐं
3. रंगमंच
4. चित्रपट
5. आकाषवाणी
6. दूरदर्षन
7. फिल्म आदि।

विज्ञापन व पत्र–पत्रिकाऐं शब्दों तक सीमित हैं। रंगमंच, चित्रपट, आकाषवाणी, दूरदर्षन, फिल्म आदि दृष्य और श्रव्य दोनों है।

शब्द ही लोगों के बीच संप्रेषण का माध्यम है। शब्दों का सम्मिश्रण ही भाषा है। जनसंचार के लिए भाषा की आवष्यकता है। भाषा–प्रोद्यौगिकी एक शास्त्रीय, तकनीकी प्रबंधकीय एवं अभियांत्रिकी शाखा है जो भाषायी सूचनाओं के तन्त्र को विकसित करके उसका प्रयोग कम्प्यूटर के माध्यम से करते हुए मानव और मषीन के बीच सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवेष को सुदृढ़ बनाती है। इस प्रकार भाषा के बिना जनसंचार का लक्ष्य पूरा नहीं हो सकता चाहे माध्यम कुछ भी हो। इसलिए जनसंचार के सभी संसाधनों के लिए हर युग में किसी न किसी भाषा का प्रयोग आवष्यक रूप से होता आया है, चाहे उसका माध्यम कुछ भी रहा हो। भाषा ने जनसंचार का माध्यम सुगम बनाया है तथा इसे आकर्षक बनाया है।

भाषा के बिना मनुष्य, समाज और राष्ट्र मूक है। भाषा राष्ट्र को जोड़ने, संस्कृति और समाज को संगठित करने, संवाहित करने तथा अर्थव्यवस्था दृढ़ बनाने का सषक्त आधार है।

हिन्दी राजभाषा, राष्ट्रभाषा और जनसंपर्क भाषा के रूप में अपनी भूमिकाओं का निर्वहन करने में संलग्न है। हिंदी भाषा विविध भाषा–भाषियों के बीच आपसी संपर्क की भाषा बन गयी है। हिन्दी भाषा सहजता, सरलता और सुगमता का संगम है जिससे यह बोलने व सुनने तक ही सीमित न रहकर जीवन के विविध क्षेत्रों की जरूरत के अनुसार आपसी व्यवहार की भाषा के रूप में समादृत हुई है। आज हिन्दी भाषा की भूमिका सामान्य जन को आपस में जोड़ने में सर्वाधिक कारगर है। हिन्दी आज संपर्क भाषा के रूप में जानी जाती है। आज

हिन्दी अनेक भाषाओं के बीच एक विषिष्ट भाषा बनकर जन–जन, राज्य–राज्य, देष–विदेष के बीच संपर्क स्थापित करने वाली भाषा है। आज के समय में वेब मीड़िया किसी भी भाषा के प्रचार और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। ''वेब मीडिया ने हिन्दी रूपी मोती भारत रूपी सीपी से बाहर निकालकर समस्त विष्व के गले का हार बनाया है।'' वेब दुनिया में सर्च इंजन से जहाँ पलक झपकते ही हिन्दी और हिन्दी से जुड़े समस्त लेख, जानकारी षिक्षा से संबन्धित समस्त विषय–वस्तु तुरन्त सुलभ हो जाती है वहीं ई–मेल रोमन लिपि में लिखे गये पृष्ठों को हिन्दी में अनुवादित करके एक देष से दूसरे देष में भेज रहे है।'' हिन्दी साहित्य और पत्रकारिता को आज भाषा समस्या के दौर में जो उच्च स्थान व गौरव प्राप्त हुआ है। वह वेब मीड़िया की ही देन है, वेब मीडिया से ही संभव हो पाया है कि अमेरिका, रूस आदि देषों में समस्त गोष्ठियों, सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा हैं। विदेषों में हिन्दी के पत्र–पत्रिकाऐं प्रकाषित हो रहे है। वेब मीडिया से ही उभरते हुए साहित्यकारों को अपनी प्रतिभा को जन–जन तक पहुंचा कर अपने को हिन्दी साहित्य मंच पर स्थापित करने का अवसर मिल रहा ळें

सभी चैनल्स हिंदी भाषा के विविध आयाम जनता के सामने रख रहें हैं, बी बी सी हिन्दी (ऑनलाइन) की संपादिका सलमा जैदी कहती हैं, ''वेब जर्नलिज्म प्रिंट का ही विकसित रूप माना जाता है, यहाँ लिखने और छपने के स्टाइल में फर्क जरूर होता है। यहां वाक्य छोटे, सरल और आसानी से पढे जा सकने वाले शब्दों के इस्तेमाल के साथ लिखे जाते हैं। यहां पैराग्राफ छोटे होते है और खबर की भाषा ऐसी होती है जिसे लोग सहजता से समझ सकें,'' 4 कहना सही होगा कि नए जनसंचार माध्यमों में वेब का करिश्मा सरल भाषा के लिए अपना प्रभाव बना रहा है। अक्षर सॉफ्टवेयर से हिंदी में शब्द संसाधन की शुरूआत मानी जाती है जो दिन–ब–दिन विकसित होती गयी। अब हिन्दी के साथ–साथ सभी भारतीय भाषाओं में कम्प्यूटर का प्रयोग आसान बन गया है। यूनीकोड के कारण अब हिन्दी भाषा का इंटरनेटीय रूप ज्ञानवर्धक दृष्टिगोचर होता है,''कंम्प्यूटर पर हिंदी और अंग्रेजी दोनों में काम करने के लिए तीन विकल्प उपलब्ध है– इनमें पहला है सामान्य कामों वाले सॉफ्टवेयर आईबीएम पीसी कंप्यूटर पर द्विभाषी शब्द संसाधन के कई पैकेज बाजार में मिलते है। दूसरा विकल्प बहु–उपयोगी सॉफ्टवेयर का है, एमएस डॉस आधारित सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल हो सकता है। तीसरा विकल्प भाषा नामक एक बहुभाषी शब्द संसाधक है जिसका आईबीएम और समकक्ष कंप्यूटरों का उपयोग कंप्यूटरों पर उपयोग हो सकता है,'' हिंदी भाषा विकास के कंप्यूटर प्रयोग में नए जनसंचार माध्यम अग्रणी हैं, इसे नकारा नहीं जा सकता, इन दिनों नए जनसंचार माध्यमों में ब्लॉग अपनी अलग भूमिका निभा रहा है,''वर्ष 2003 में ब्लॉग की दुनिया में हिंदी का प्रवेष हुआ और आज बडी संख्या में हिंदी ब्लॉग भी पढे और पढाए जा रहे है''।

चिट्ठा जगत हिंदी को लेकर अब अपनी विशालता की ओर बढ रहा है। यह बात सराहनीय है, राजनीति, सांस्कृतिक, साहित्यिक, व्यक्तिगत, वाणिज्य, अनुसंधान और शिक्षा आदि क्षेत्रों की जानकरी ब्लॉग पर हिन्दी भाषा में उपलब्ध हो रही है। 1997 से लेकर 2010 तक के ब्लॉगिंग इतिहास का अध्ययन करने से पता चलता है, कि दुनियाभर के अनेक साहित्यकार अब हिंदी भाषा में ब्लॉग विकास के लिए अपनी बात को इस नए जनसंचार माध्यम के जरिए लोगों तक पहुँचा रहे है, इन्टरनेट के कारण नए जनसंचार माध्यम हिंदी भाषा विकास के लिए सही दिशा में कदम बढा रहे है '' हमारा अपना भारतीय प्रौद्योगिकी विकास आज अपने शीर्ष पर है। हमारी जनसंचार प्रणाली पहले से बेहतर होती जा रही है। इस विकास की कडी को जुडने में एक लम्बा वक्त लगा, सरकारें आती रही और जाती रही लेकिन भारतीय जनसंचार और प्रौद्योगिकी अपने विकास के पहिये को घूमाती रही ''हिंदी भाषा के विकास में नए जनसंचार माध्यमों की उपादेयता का विचार किया जाए तो केबल, मल्टीमीडिया, इंटरनेट आदि अंतरिक्ष नए जनसंचार माध्यम हमकालीन समाज में हिंदी भाषा के साथ–साथ सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण को बढावा देने में सफल हुए दृष्टिगोचर होते है। आडियो, डिजिटल आडियो, विविध कोडेक्स, डिवाइसेस, विभिन्न सॉफ्टवेअर्स और इलेक्ट्रानिक्स मेल मोबाइल, विडियो ई–मेल, विज़ुअल डिस्प्ले टर्मिनल के माध्यम से हिन्दी भाषा का नया रूप सामने ला रहे है, नए जनसंचार माध्यमों में सर्वाधिक शक्तिशाली सूचना माध्यम के रूप में इंटरनेट का उल्लेख करना होगा। इंटरनेट के माध्यम से जो हिंदी का विकास हो रहा है वह सराहनीय है, वेब मीडिया इंटरनेट के कारण ही आज लोकप्रिय बन रहा है, स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड न्यूमीडिया स्टडीज, नईद दिल्ली के प्रोफेसर सुभाष धुलिया का मत दृष्टव्य है'' प्रौद्योगिकीय युग में आज लगभग सभी समाचार पत्र–पत्रिकाऍं, रेडियो और टेलीविजन चैनल्स ऑनलाइन हो रहे है।

आज समाचार चैनलों पर दिखाए जाने वाली खबरों और प्रोग्रामों का इंटरनेट वर्जन मौजूद है और इसी तरह सभी समाचार पत्र–पत्रिकाएं भी वेब पत्रकारिता की दुनिया में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। इंटरनेट उपभोक्ताओं की तेजी से बढ रही संख्या इसी ओर इशारा कर रही है कि आगले कुछ वर्षो में वेब मीडिया कहीं अधिक प्रभावशाली मंच बनने की ओर उन्मुख है, हालांकि पश्चिमी देशों में काफी हद तक यह पहले ही हो चुका है..... नई प्रौद्योगिकी से समाचार मीडिया मे भी आमूलचूल परिवर्तन हुए हैं, साथ ही इसके विस्तार की गहराई और व्यापकता भी बेमिसाल है।

बाजारीकरण ने आर्थिक उदारीकरण, सूचनाक्रान्ति तथा जीवन शैली के वैष्वीकरण की स्थिति से हिन्दी भाषा की अभिव्यक्ति के कौषल का विकास किया है। आज प्रचार माध्यमों की भाषा हिन्दी होने के कारण वे भारतीय परिवार और सामाजिक संरचना की उपेक्षा नहीं कर सकते। हिन्दी का यह रूप बाजार सापेक्ष होते हुए भी संस्कृति निरपेक्ष नहीं है। विज्ञापनों से लेकर चलचित्रों के विष्लेषण द्वारा यह सिद्ध हो जाता है कि संचार माध्यमों की हिन्दी, अंग्रेजी और अंग्रेजी की छाया से मुक्त है और अपनी जड़ों से जुडी हुई है।

हिन्दी अखिल भारतीय ही नहीं अपितु वैष्विक विस्तार के नए आयाम छू रही है। विज्ञापनों की भाषा और चल चित्र की भाषा के रूप में सामने आने वाली हिन्दी को जन–जन ने अपने सक्रिय भाषा कोष में शामिल कर लिया है। हिन्दी की यह लोकप्रियता संचार माध्यमों की बड़ी देन है।

यह सत्य है कि हिन्दी में अंग्रेजी के स्तर की विज्ञान और प्रोद्यौगिकी पर आधारित पुस्तकें नहीं है। उसमें ज्ञान विज्ञान से संबंधित विषयों पर उच्चस्तरीय सामग्री की दरकार है। विगत कुछ वर्षों से इस दिषा में उचित प्रयास हो रहे हैं। अभी हाल ही में महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विष्वविद्यालय वर्धा द्वारा हिन्दी माध्यम में एम.बी.ए. का पाठ्यक्रम आरंभ किया गया। इसी तरह 'इकोनोमिक्स टाइम्स तथा बिजनेस स्टूडैन्ट' जैसे अखबार हिन्दी में प्रकाषित होकर उसमें निहित संभावनाओं का उद्घोष कर रहे हैं। पिछले कई वर्षों में यह भी देखने में आया है कि 'स्टार न्यूज जैसे चैनल जो अंग्रेजी भाषा में आरम्भ हुये थे वे विषुद्ध बाजारी दवाब के चलते पूर्णतः हिन्दी चैनल में रूपांतरित हो गए। साथ ही ''ई.एस.पी.एन. तथा स्टार स्पोर्टस' जैसे खेल चैनल हिन्दी में कमेंट्री देने लगे हैं। हिन्दी को वैष्विक संदर्भ देने में उपग्रह–चैनलों, विज्ञापन एजेंसियों, बहुराष्ट्रीय निगमों तथा यांत्रिक सुविधाओं का विषेष योगदान है। वह जनसंचार माध्यमों की सबसे प्रिय एवं अनुकूल भाषा बनकर निखरी है। आज विष्व मे सबसे ज्यादा पढ़े जाने वाले समाचार पत्रों मे आधे से अधिक हिन्दी के हैं।

वस्तुस्थिति यह है कि आज भारतीय उपमहाद्वीपीय ही नहीं बल्कि दक्षिण पूर्व एषिया मॉरीषस, चीन, जापान, कोरिया, मध्य एषिया खाडी देषों, अफ्रीका, यूरोप, कनाडा़ तथा अमेरिका तक हिन्दी कार्यक्रम

उपग्रह चैनलों के जरिए प्रसारित हो रहे हैं और भारी तादाद में उन्हें दर्षक भी मिल रहे हैं।

आज मॉरीषस में हिन्दी सात चैनलों के माध्यम से धूम मचाए हुये है। विगत कुछ वर्षों में एफ.एम. रेडियों के विकास से हिन्दी कार्यक्रमों का नया श्रोता वर्ग बन गया है। हिन्दी अब नए प्रोद्यौगिकी के रथ पर आरूढ़ होकर विष्वव्यापी बन रही है। उसे ई–मेल, ई–कॉमर्स, ई–बुक, इंटरनेट, एस. एम. एस. एवं वेब जगत में बड़ी सहजता से पाया जा सकता है। इन्टरनेट जैसे वैष्विक माध्यम के कारण हिन्दी के अखबार एवं पत्रिकाऐं दूसरे देषों में भी विविध साइट्स पर उपलब्ध हैं।

माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, सन, याहू, आई. बी. एम., फेसबुक जैसी विष्वस्तरीय कंपनियां अत्यन्त व्यापक बाजार मुनाफे को देखते हुए हिन्दी प्रयोग को बढ़ावा दे रहीं है। हिन्दी की विकास यात्रा पत्रकारिता, जनसंचार माध्यमों तथा हिन्दी सिनेमा के साथ –साथ चल रही है। आज के समय की प्रमुख चुनौती है कि हिन्दी ह्रदय की अभिव्यक्ति के साथ मस्तिष्क की जटिलताओं की तथा उन जटिलताओं से अद्‌भुत विज्ञान और तकनीक की संवाहिका बन सके। हिन्दी को भूमंडलीय पहचान देने में जनसंचार की अहम भूमिका है। संचार माध्यमों की भाषा के रूप में हिन्दी की प्रगति दर्षनीय है।

हिन्दी के प्रसार में जनमाध्यम सिनेमा की भी महत्वपूर्ण भूमिका है जिस प्रकार हिन्दी उपन्यासों को पढ़ने के लिए लोग हिन्दी सीखते थे उसी प्रकार आज लोग हिन्दी सिनेमा को देखने के लिए हिन्दी सीख रहे हैं।

आज बाजारवाद शबाब पर हैं। उत्पादक तरह–तरह से उपभोक्ताओं को लुभाने का प्रयास करते हैं। ऐसे में विज्ञापन की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। दिवा–रात्रि समाचार चैनल, एफ.एम. रेडियो और विज्ञापन एजेंसियों की बाढ़ में बिना लाग लपेट बेबाक और संक्षिप्त शब्दों में पूरा रचनात्मक हिन्दी बाजार है। इंटरनेट पर हिन्दी का अभूतपूर्व विकास हो रहा है। इंटरनेट पर हिन्दी के कई अखबार नेट पर उपलब्ध हैं। हिन्दी में ब्लाग लेखक आज अच्छी रचनाऐं दे रहे हैं। भारत में इलेक्ट्रोनिक जनसंचार माध्यमों का प्रयोग दिनोंदिन बढ़ रहा है। यह देष की संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी के विकास का स्पष्ट संकेत है। प्रचलित और सबकी समझ में आने वाली हिन्दी ही संपर्कभाषा का रूप ले सकती है। साहित्यिक और व्याकरण सम्मत हिन्दी का आग्रह रख हम हिन्दी का विकास नहीं कर पायेंगे। सामान्य बोलचाल में अंग्रेजी, अरबी, उर्दू, फारसी से लेकर देष की तमाम बोलियों और प्रादेषिक भाषाओं के शब्दों के हिन्दी में प्रयोग से सही अर्थों मे यह जनभाषा बन सकेगी, तभी हिन्दी और हिन्दीतर भाषाइयों के बीच दूरी पट सकेगी। हिन्दी की विकास यात्रा में इसे और अधिक फंक्षनल अर्थात् प्रयोजन मूलक बनाया जाए। प्रयोजनमूलक हिन्दी जीवन और समाज की जरूरतों से जुड़ी एक जीवन्त, सषक्त और विकासषील हिन्दी भाषा है। आज ऐसी ही फंक्षनल हिन्दी के जरिए हमारा प्रयास भारत के सभी प्रान्तों, अंचलो और जनपदों को सौहार्द्र, सौमनस्य व परस्पर स्नेह से एक सूत्र में बांधने का होना चाहिए। तभी तो आज चक दे इंडिया हिट है।

जब तक मनुष्य हैं तो संवेदना है। जब तक संवेदना है तो संवाद है। जब तक संवाद है तो जिज्ञासा है। जिज्ञासा है तो ज्ञान है और ज्ञान है तो भाषा का अस्तित्व बना ही रहेगा। वस्तुतः वेब मीड़िया ने हिन्दी भाषा को जो पंख प्रदान किये है, वो विष्व गगन में उड़ान भरने में सहायक है।